कृषि राजस्व वृद्धि हेतु खाद्य प्रसंस्करण

सतीश नुकाला
फाउंडर, बिग हाट

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जो कृषि पर निर्भर एक बड़ी आबादी का भरण–पोषण करता है। किसान अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए अथक परिश्रम करते हैं। आंकड़ों के अनुसार 2050 तक जनसंख्या लगभग जनसंख्या लगभग 9.7 अरब के निकट हो जाएगी। बढ़ती जनसंख्या और भोजन की माँग के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए, खाद्य उत्पादन में 80 प्रतिशत की वृद्धि होनी चाहिए। ऐसी वृद्धि या तो पैदावार में वृद्धि और/या एक ही भूमि पर हर साल कई बार फसलें उगाई जाये, तभी ये प्रक्रिया संभव है।

ऐसीमाँग से मेल खाने, खाद्य उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु कीटनाशकों और उर्वरकों के उपयोग पर भारी निर्भरता है। इसलिए, कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग, रातों रात फसल उगाने के लिए उर्वरकों का अनियंत्रित छिड़काव, एक प्रचलित कृषि गतिविधि बन गया है। यह फसल, पर्यावरण और मनु यों के स्वास्थ्य के लिए एक चिंताजनक विशय है। यह एक ऐसी कृषि प्रणाली की आवश्यकता पर प्रकाश डालता हैजो हानिकारक कीटनाशकों के उपयोग को कम करते हुए, पर्यावरण पर बिना कोई प्रतिकूल प्रभाव डाले, फसल उत्पादन और उपज में वृद्धि सुनिश्चित करती है।

इसलिए विगत वर्षों में दुनिया अब राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा स्थापित खाद्य सुरक्षा मान कोंकाकड़ाई से पालन सुनिश्चित करने वाली खाद्य सुरक्षित प्रथाओं के प्रति जागरूक हो गया है।

वर्तमान खाद्य सुरक्षित बाजार 120.76 बिलियन अमेरिकी डॉलर का है और 2027 तक इसके 236.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक बढ़ने की आशाहै। यह भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए स्थापित मानकों के अनुरूप फसल उपज की माँग और आपूर्ति करने की बड़ी क्षमता है।

बाजार में कई बाधाएँ उपस्थित हैं जो सुरक्षित खाद्य उद्योग के विकासमें रूकावट डालती हैं। लगातार बदलते खाद्य सुरक्षा मानदंड, उपज की

आवश्यक गुणवत्ता, कीटनाशक अवशेष, माइक्रोबियल संदूषण, भारी धातुओं की उपस्थिति, वैश्विक प्रमाणन, सही फसल बुद्धि, सुनिश्चित गुणवत्ता की आपूर्ति, खेत की ट्रेसबिलिटी और प्रतिस्पर्धी मूल्य निर्धारण आदि कुछ ऐसी चुनौतियाँ हैं जिनका समाधान निकालने की आवश्यकता है।

उपरोक्त के सीमा में, बिग हाट ने एक अद्वितीय "स्थिरता विकास कार्यक्रम" (एसडीपी) शुरू किया है। इस कार्यक्रम में जहाँ टिकाऊ कृषि प्रथाओं का उद्देश्य पर्यावरण की रक्षा करना और मिट्टी की उर्वरता को संरक्षित करते हुए प्राकृतिक संसाधन आधार की पुन: पूर्ति करना है। कार्यक्रम एक एकीकृत दृष्टिकोण का पालन और एक ठोस आधार पर कार्य करता है जो

https://doi.org/10.52151/aet2023473.1672

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मानकों का पालन करते हुए नवीन समाधानों के साथ सर्वोत्तम गुणवत्ता वाली फसल की उपज का निरंतर उत्पादन करता है। इस प्रकार, किसानों की आजीविका में सुधार और संगठनों और उद्योग भागीदारों के लिए मूल्य संवर्धन करता है।

पूरा कार्यक्रम तकनीकी रूप से सक्षम है और उन दोनों संगठनों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार किया गया है जो खाद्य सुरक्षित उपज की खरीद पर ध्यान दे रहे हैं और किसानों को उन्नत आजीविका प्रदान करने वाली अपनी कृषि पद्धतियों के उत्थान के लिए कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यह किसानों के लिए चरण–दर–चरण मार्गदर्शन के साथ उच्च गुणवत्ता वाली फसलें उगाने के द्वार खोलता है तथा किसानों और ऐसे संगठनों के बीच एक पुल के रूप में कार्य करता है।

कार्यक्रम को फसल डेटा इंटेलिजेंस, फसल चक्र पर चरण–दर–चरण दृश्यता और उपयोग किए गए रसायनों के कठोर पालन द्वारा समर्थित किया जाता है, जहां संगठन को वास्तविक समय के आधार पर न्यूनतम स्तर पर सभी कृषि गतिविधि यों परपूर्ण दृश्यता मिलती है। उद्योग में वर्षों के अनुभव के साथ एक मजबूत ऑन–फील्डटीम के साथ, कृषि गतिविधियों की निकटता से निरिक्षण किया जाता है साथ ही सार्थक अंतर्दृष्टि प्राप्त करनेए सूचित निर्णय लेने और भागीदार संगठन या ग्राहकों के लिए मूल्यसंवर्धन हेतु तकनीकों का उपयोग करता है। टीम सुरक्षित कृषि तकनीकों को सुनिश्चित करते हुए, ज्ञान साझा करती है तथा अच्छी कृषि पद्धतियों (जीएपी) को नियंत्रित करने की सुविधा प्रदान करती है। यह डेटा–संचालित किसान–केंद्रित कार्यक्रम कृषि रसायन से सुरक्षित खाद्य प्रथाओं का निर्माण लागू और विनियमित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

बीज विक्रय से ग्राहक की माँग तक और व्यवहार पैटर्न के आधार पर कार्यक्रम में किसानों की भागीदारी की निकटता से जाँच की जाती है। उत्पादन वृद्धि की कृषक प्रथम मानसिकता के साथ, हम किसानों को अपनी कृषि गतिविधियों को सतत रूप से आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। ये कार्यक्रम कृषि आदानों पर निर्बाध आपूर्ति श्रृंखला मॉडल के साथ किसानों का मार्गदर्शन करने के लिए ऑन–फील्ड टीमों की उपस्थिति और खाद्य सुरक्षित उपज सुनिश्चित करता है।

इस कार्यक्रम के साथ, हमारा लक्ष्य खाद्य–सुरक्षित उद्योग में एक डिजिटल पारिस्थिति की तंत्र बनाने और आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के लाभों का उपयोग करने के लिए संस्थानों और संगठनों तक पहुँचना है और विश्व में अधिक से अधिक किसानों को इस प्रक्रिया में सम्मिलित करना है।